कलमजीवी पत्रकार तथा उत्तम अनुवादक नरोत्तम नागर ०–

नरोत्तम नागर जी को हम पाठक लोग एक बेहतरीन अनुवादक के तौर पर जानते हैं लेकिन उनके बारे में इससे ज़्यादा जानकारी कहीं नहीं मिलती, अमृतलाल नागर जी द्वारा प्रस्तुत संस्मरणात्मक लेख में उनके जीवन और कार्यों के बारे में थोड़ी जानकारी मिलती है। उन्होंने अनेकों सोवियत रचनाओं का उत्कृष्ट अनुवाद किया है जिसमें से कुछ मुख्य रचनाएँ निम्न हैं:

1) मक्सिम गोर्की की आत्म कथात्मक त्रयी (मेरा बचपन, जीवन की राहों पर तथा मेरे विश्व विद्यालय),

2) अंतोन मकारेंको के उपन्यास का अनुवाद "जीवन की ओर",

3) पुश्किन की" इवान बेल्किन की कहानियां",

4) तुर्गेनेव की शिकारी के शब्द चित्र,

5) गोर्की की कहानियाँ तथा अनेकों अन्य रूसी कहानियाँ इत्यादि।

"नरोत्तम नागर पचपन-छप्पन वर्ष की आयु तक कठिन पापड़ बेल-बेलकर अपनी कलमजीवी ज़िन्दगी का छकड़ा ठेलते हुए थक गए, बीमार हुए और मर गए। यह 'मर गए' शब्द दोस्तों के बीच हंसी-मजाक में कितने सहज भाव से इस्तेमाल होते रहते हैं, पर दोस्तों में से जब कोई एक सचमुच मर जाता है तब जीनेवालों के मनों पर जो बीतती है वह बखान से बाहर की अनुभूति है। नरोत्तम सन् '३३-'३४ में लगभग दिल्ली की एक फिल्मी पत्रिका 'रंगभूमि' के सम्पादक बने। मैं नया लेखक था, अपनी रचनाएं इधर-उधर छपने के लिए भेजा करता था, सम्पादकीय दफ्तरों में वे प्रायः खो जाया करती थीं। एक रचना 'रंगभूमि' के लिए नरोत्तम के पास भेजी। साथ में पत्र लिखा कि नया लेखक होने के कारण मेरी रचना अस्वीकृत तो होगी ही लेकिन आपके "नागर" होने के कारण मैं केवल इतनी सुविधा चाहता हूं कि आप उसे अस्वीकार करने के कारण मुझे अवश्य लिख दें । जवाब देने के लिए टिकट साथ भेजे।

पांच-छः दिवसों के बाद नरोत्तम का पत्र आया। कहानी सराही । दूसरी भी मांगी और यह भी लिखा कि तुम नये लेखक हो तो मैं भी नया सम्पादक हूं। उसी समय से हम एक-दूसरे के मित्र हो गए। सन् '३६ के आरम्भ में दिल्ली जाने पर पहली बार उनसे मेरी भेंट हुई। संपादक की हैसियत से नरोत्तम की सबसे बड़ी विशेषता यह थी कि वे नई प्रतिभाओं को पहचानने और उन्हें अपने काम के लिए जुटाने की कला में बड़े ही पटु थे। बड़े हंसमुख, पुरमज़ाक, कैरम के शौकीन, पान के गुलाम, किताबों के मजनूं ।

सन् '३६-'३७ के लगभग ही नरोत्तम ने 'रंगभूमि' और 'चित्रपट', 'नवयुग' आदि पत्रिकाओं के मालिकों से ऊबकर मेरठ में अपना साहित्यिक मासिक पत्र 'संघर्ष' निकाला । एक या दो अंक निकले। फिर 'संघर्ष' को कांग्रेस सोशलिस्ट पार्टी ने ले लिया। वह मासिक से साप्ताहिक बनकर मेरठ से लखनऊ आ गया । नरोत्तम उसके सम्पादक बने रहे । अब उनकी स्थिति मालिक से वेतनभोगी की हो चुकी थी । उन्हें पार्टी के नेताओं की नीतियों के अनुसार चलना पड़ता था । वे स्वाभिमानी थे, सिद्धान्तवादी और विचारशील व्यक्ति थे, इसलिए अक्सर पार्टी के अधिकारियों की हर बात से सदा सहमत होना उनके लिए बड़ा कठिन था। इसके अतिरिक्त उनके स्वभाव में दुर्भाग्यवश एक दोष भी था जिसके कारण उन्हें बहुत कष्ट भोगने पड़े । दोष यह था कि नरोत्तम अपने मन के

किसी अभाव के कारण लोगों की साधारण बातों का भी अक्सर बुरा मान जाते थे । एक दिन किसी बात पर तन गए । मेज़ पर अपना त्याग-पत्र लिखकर रखा और दफ्तर से बाहर आ गए। संघर्ष कार्यालय हिवेट (वर्तमान शिवाजी मार्ग) पर था। रामविलास शर्मा (अब स्वनामधन्य डाक्टर) और नरोत्तम नागर उसीके आसपास रहते थे । हम तीनों का घना साथ था। फ्रायडवाद से लेकर समाजवाद तक से नई-नई जान- पहचान हो रही थी । नरोत्तम फ्रायड के परम भक्त। कुछ दिनों तक रामविलास जी और मैं भी उनके मुरीद रहे । रामविलास जी खरगोश की चाल और मैं अंग्रेज़ी भाषा का कम अभ्यासी होने के कारण कछुए की चाल फ्रायडियन राह पर हिरन मार्का नरोत्तम जी के साथ दौड़ते रहे। खैर ।

नरोत्तम जी के 'संघर्ष' सम्पादकत्व-काल के कुछ महीनों में हमारी दैनिकः बैठकों ने हमें एक जान तीन कालिब-सा बना दिया था । नरोत्तम की नौकरी छूटी तो मैंने उनके साथ मिलकर एक साप्ताहिक पत्र प्रकाशित करने की योजना बनाई । हास्य-व्यंग्य का माध्यम ही हम मित्रों को रुचिकर लगा । अंग्रेज़ी राज में नई-नई कांग्रेस सरकार बनी थी । हमारा भी नया खून, नया जोश था । चकल्लसी दिन थे - दक्षिणपंथियों से लेकर वामपंथियों तक से छेड़ लेने में सुख मिलता था । कवि मित्र पढ़ीस जी के कविता-संग्रह 'चकल्लस' का नाम रामविलास जी ने सुझाया और हम सबको पसन्द आ गया ।

लगभग पौने दो साल हमने खूब चकल्लस की । शाम को यूनिवर्सिटी से पढ़- कर रामविलास जी मेरे यहां आते । निराला जी कभी प्रतिदिन और कभी हफ्तो बाद आते थे । पढ़ीस जी अक्सर आया करते थे । इनके अतिरिक्त मेरे तीन बाल- बन्धु ज्ञानचन्द जैन, राजकिशोर श्रीवास्तव और स्व० गोविन्दबिहारी खरे भी उस चकल्लस गोष्ठी में सम्मिलित थे । हंसी, व्यंग्य, बौद्धिक चर्चाएं, काम की योजनाएं सभी रंगे रहते थे । कभी-कभी नरोत्तम, रामविलास और मैं एक साथ एक योजना के अनुसार तीन प्रकार का मैटर लिखने बैठ जाते थे। वहीं लिखते, वहीं आलोचना होती और तत्काल नये सुधारों के बाद प्रेस मैटर बन जाता था । बाहर से अच्छा मैटर प्रायः न मिलने पर हम तीनों ही पूरा अंक अनेक उपनामों से लिख डालते थे । व्यक्तिगत रूप से मेरा यह सौभाग्य रहा कि रामविलास जी, नरोत्तम जी जैसे मित्रों के रूप में मुझे आलोचक बड़े तीखे और खरे मिलें । इनसे होड़ लेने के लिए मुझे कठिन मेहनत करनी पड़ती थी । हम आपस में बहुत साफ थे । हम तीनों में कभी-कभी खटक भी जाती थी । रामविलास जी से हमारी मुंह-फुलौवल कभी दस-पन्द्रह मिनटों से अधिक अवधि की नहीं हुई; किन्तु नरोत्तम रूठें तो दो-दो चार-चार दिन हम लोगों से कटे रहें ।

नरोत्तम केवल हास्य-व्यंग्य के माध्यम ही से संतुष्ट नहीं थे । वे 'उच्छङ्खल' नामक एक फ्रायडियन मासिक प्रकाशित करने के लिए भी मुझे उकसा रहे थे । मैं उसके पक्ष में न था । यहां से वे उखड़े । एक दिन (निश्चय ही रविवार रहा होगा) सवेरे आठ बजे रामविलास जी और पढ़ीस जी आ गए । नरोत्तम जी को बुलवाया गया । दो बार आदमी भेजने पर आए । यह मूड था जैसे मालिक के बुलाने पर मातहत आया हो । मेरे एक साधारण-से मज़ाक को उनकी झक ने इस रूप में लिया जैसे मालिक ने मज़ाक किया हो । तीखे व्यंग्यकार तो थे ही, नरोत्तम ने एक बेतुकी चुटकी ली । मुझे भी ताव आ गया कि इस मालिक-मातहत की चकल्लस ही को अब न रखूंगा । मैंने तत्काल घोषित कर दिया कि मैं 'चकल्लस' का प्रकाशन बन्द करता हूं । किस्सा

खत्म । 'चकल्लस' यों बन्द हुआ और तब हुआ जब कि जमाव पर आ चला था । खैर ! नरोत्तम जी के साथ मेरा मैत्री-भाव यथावत् बना रहा । रामविलास शर्मा भी उनके प्रति वैसे ही भाव रखते रहे ।

नरोत्तम नागर आजीवन अपने से और ज़माने से जूझते ही रहे। उनकी लड़ाई कभी गलत कभी सही भले ही रही हो लेकिन लड़वैये वह अन्त तक रहे । नरोत्तम अपने रंग के एक ही आदमी थे...थे।"

उपरोक्त लेख हिन्दी के प्रसिद्ध लेखक अमृतलाल नागर जी के संस्करणों की पुस्तक, "जिनके साथ जिया" से लिया गया है। साभार🙏

#नरोत्तम #नागर #नरोत्तम_नागर

#अनुवादक

#सोवियत_साहित्य